नया साल 2026- विश्व शान्ति और सुख-समृद्धि की शुभकामनाएँ

राजयोगी ब्र.कु. अंगापर

नए साल का आगमन केवल कैलेन्डर का बदलना नहीं, बल्कि चेतना का नवजीवन है। हर आत्मा के भीतर यह गहरी कामना होती है कि "मैं और मेरा संसार सुखी हो, सबके जीवन में शान्ति, प्रेम और समृद्धि का प्रवाह हो।" यही सच्ची आध्यात्मिक शुभकामना है- "सर्वे भवन्तु सुखिनः।"

1. सबके लिए शुभभावना का संकल्प

नए साल की पहली घड़ी में यह संकल्प रखें- "मेरे प्रत्येक विचार से सब आत्माएँ सुख, शान्ति और शक्ति का अनुभव करें।" जब हमारा मन शुभभावना से भरा होता है तो वह वातावरण में सकारात्मक तरंगें फैलाता है। परमात्मा कहते हैं- "विचार ही वायब्रेशन हैं और वायब्रेशन ही सृष्टि को बदलते हैं।" यदि हर आत्मा यह संकल्प ले कि मैं किसी के लिए बुरा नहीं सोचूँगा, तो धरती पर दुःख, द्वेष और दुःख के बादल अपने आप छँट जाएंगे।

2. स्वयं सुखी बनकर दूसरों को सुख देना

सुख बाँटने से घटता नहीं, बढ़ता है। परन्तु देने के लिए पहले स्वयं को भरना पड़ता है। इसलिए आत्मा को रोज़ परमात्मा से शक्ति और सुख का स्टॉक लेना चाहिए। जब आत्मा परमात्मा की याद में रहती है तो वह भीतर से इतनी भरपूर होती है कि उसकी दृष्टि, वाणी और कर्म से ही सुख की किरणें झलकती हैं। ऐसी आत्मा जहाँ भी जाती है, वहाँ शान्ति का वातावरण बन जाता है।

3. विश्व शान्ति का वास्तविक मार्ग

विश्व शान्ति के लिए कोई राजनीतिक संधि या भौतिक साधन पर्याप्त नहीं, क्योंकि यह युद्ध बाहर नहीं, पहले मन में होता है। इसलिए मन की शान्ति ही विश्व शान्ति की नींव है। राजयोग ध्यान के माध्यम से जब आत्मा अपने मूल स्वरूप- "शान्ति में स्थित होती है तो वही शक्ति विश्व को शान्त बनाती है।" हर आत्मा यदि प्रतिदिन पाँच मिनट "वर्ल्ड पीस मेडिटेशन" करे, तो वातावरण में अद्भुत परिवर्तन संभव है।

4. सभी के जीवन में समृद्धि और संतुलन

समृद्धि का अर्थ केवल धन नहीं, बल्कि संतुलन और संतोष है। जो आत्मा अपने विचारों, समय और संबंधों में संतुलन रखती है, वही सच्ची समृद्धि है। इस नये साल में यह संकल्प लें- "मैं जो भी प्राप्त करूँ, उसे ईश्वर का दान मानकर कृतज्ञ हूँ।" कृतज्ञता ही समृद्धि का द्वार खोलती है।

5. विश्व के प्रति शुभदृष्टि और दुआएं सबसे सुंदर उपहार

जब हम किसी को दुआ देते हैं, तो वह दुआ पहले हमें ही आशीर्वाद देती है। इसलिए इस नए साल 2026 में हर आत्मा के लिए शुभकामना करें- "सभी आत्माएँ स्वस्थ, सुखी, शान्तिपूर्ण और समृद्ध रहें।" यह एक ऐसा संकल्प है जो आत्मा को हल्का, पवित्र और प्रसन्न बना देता है।

नया साल केवल खुशियों का त्योहार नहीं, बल्कि आत्मा के नव-जागरण का पर्व है। इस वर्ष हम सब मिलकर यह दिव्य संदेश फैलाएँ- "सब सुखी रहें, सब निरोग रहें, सबका जीवन शान्ति और समृद्धि से भरा रहे।" जब हर आत्मा शुभ भावना से भरेगी, तब सचमुच धरती पर स्वर्ग का आरंभ होगा। यही है 2026 का सच्चा आध्यात्मिक उपहार- सुख, शान्ति और समृद्धि से भरा विश्व।

संगमयुग पर बाबा ने अनेकानेक झूले दिए हैं, उन्हीं झूलों में सदा झूलते रहो तो मनोरंजन का अनुभव होता रहेगा

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

हम एक-एक से बाबा का प्यार कितना है! और उस प्यार ने सहज अपना बना दिया। मेरा बाबा जो है ही मेरा तो उस मेरे को याद करना बहुत सहज होता है। सारा दिन देखो मेरा ही याद आता है, तो हमारा पहले कौन? मेरा बाबा। दिल से कहो मेरा बाबा, वाह बाबा वाह! और बाबा का गीत है 'मेरे मीठे बच्चे, वाह मेरे बच्चे!' तो बाबा से जितना ही प्यार है उतना ही बाबा का प्यार तो अविनाशी सदाकाल का है ही। लेकिन अभी बाबा इशारे क्या दे रहा है, वर्तमान समय बाबा के यही इशारे हैं कि बस, बाबा समान बन जाएं। हर एक मेरा बच्चा कर्मेन्द्रियों को जीतने वाले, मन-बुद्धि-संस्कार को जीतने वाले विजयी बच्चे बन जाएं। बाबा कहते हैं आपकी बुद्धि में रहे- विजय जन्म सिद्ध अधिकार है। यह नशा रहना चाहिए। होगी या नहीं होगी, पुरुषार्थ तो कर रहे हैं, हो जाएगी करके बाबा को दिलासा देते, अपने को धोखे में नहीं रखना चाहिए। बाबा कहते हैं एवररेडी समझो अभी-अभी विनाश हो जाए तो सब विजयी हो जाएं, युद्ध नहीं करनी पड़े, युद्ध करने में तो लवलीन स्थिति की अवस्था का अनुभव नहीं होगा। बाबा कहता है बस, सदा लवलीन रहो यानी लव में लीन रहो। बच्चे कहते हैं बाबा सारा दिन क्या करें? बाबा ने कहा, मैंने तुमको इतने झूले बनाके दिए हैं, कभी ज्ञान के झूले में झूलो, कभी प्रेम के झूले में झूलो, कभी शक्तियों के झूले में झूलो।

एक झूले से दूसरे, दूसरे से तीसरे झूले में जाओ। सदा झूले में झूलते रहो, बाबा से प्राप्त खज़ानों से खेलो, वतन में आओ या बाबा से रूहरिहान करो, इतने काम हैं इसी में बिज़ी रहो तो मोहब्बत में मेहनत नहीं लगेगी, मनोरंजन में रहेंगे। यही हम एक-एक बच्चों के प्रति बाबा की आशाएं हैं। तो ऐसे बाबा की आशाओं को पूर्ण करने वाले सभी आशाओं के तारे हैं या उम्मीदों के सितारे हैं? जब बाबा हमारे साथ हैं तो सब सहज हो ही जाएगा। और इस आश को पूर्ण करने से ही सब खुश रहके खुशी बांटों तो खुशी बढ़ती रहेगी।

यज्ञ बाबा का, कार्य बाबा का, करन-करावनहार बाबा तो हम चिन्ता क्यों करें...!

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

कई लोग मेरे से यह सवाल पूछते हैं कि दादी आपको कोई फिकर होता है? क्योंकि जानते तो हैं कि आखिर इतने बड़े कार्य-व्यवहार की कई बातें होती हैं। रोज़ की अनेक बातें हर मिनट में आती जाती हैं। कई बार तो एक में दूसरी, दूसरी में तीसरी बात आती तो फिकर तो रहना चाहिए ना! परन्तु बाबा का मुझे यह सचमुच पर्सनल वरदान है कि हमें न कोई भी फिकर होता, न कोई चिन्ता होती, न कोई चिन्तन चलता- इसका कारण है कि हम निमित्त हैं। फिकरात करने वाला करे, मैं क्यों करूँ? मेरी कोई रचना है क्या जो मैं फिकर करूँ! तेरी रचना है तू उनका फिकर करो, मुझे आप कहते हो कि यह कार्य करो तो मैं करती हूँ। तू कराने वाला है, हम निमित्त हैं। अच्छा है तो भी आप बैठे हो, रॉन्ग हुआ तो भी जवाबदार हो। तो फिकरात किसकी? कोई बात है प्लैन करो, राय करो- कैसे करें, क्या करें लेकिन चिन्ता किस चीज़ की! चिन्ता चिता के बराबर है। हम कभी चिन्ता करते नहीं। आप लोगों ने कभी देखा है? फिकर से फारिग कींदा स्वामी सद्गुरु। तो फिकर वह करे, हम क्यों करें!

आप सभी बापदादा के दिलतख्त पर बैठ जाओ तो किसी चीज़ का फिकर नहीं होगा। जो खिलावे वो खाना है, जो पहनावे वो पहनना है, अगर उसे हमें बेगरी पार्ट में रखना होगा तो भी हम उसमें राज़ी, अगर हमें राजकुमारों की तरह पालेंगे तो भी राज़ी हैं। बाकी किस चीज़ की चिन्ता! बाबा कहता है सर्विस करो, हम कहते हैं हाँ जी। आप करावनहार हैं, जो भी कराएं हम सदा तैयार हैं।

हम सबका एक ही मंत्र है- जी हुज़ूर हम हाज़िर हैं। वह हुज़ूर है, जो हुक्म करे। बाकी चिन्ता क्या करूँ! अधिक से अधिक बस यही कहेगा ना सूखा रोटला खाओ तो भी खायेंगे, कहेंगे 36 प्रकार का खाना खाओ तो भी खायेंगे। हमारे लिए दोनों बराबर हैं। ऐसे भी कई योगी होते हैं गुफा में रहते हैं, एक-एक मास पानी पर रहते हैं, कोई टाइम आएगा तो हम भी पानी पर रह लेंगे।

समर्पित वह है जो कदम-कदम श्रीमत के फरमान पर चलता है। यही हमारा धर्म है, मार्यादा है, श्रीमत ही आज्ञा है। तो बाबा की आज्ञा में सदैव चलो। मैं कदम-कदम श्रीमत पर चल रहा हूँ- इसका चार्ट नोट करो। श्रीमत कहती है रोज़ मुरली सुनो, सवेरे उठो, ज्ञान-स्नान करो, मर्यादाओं में चलो, पवित्र रहो, ब्राह्मण कुल की लाज रखो। दूसरों की सर्विस करो, सभी को बाबा का परिचय दो, सेवा करो यह सब श्रीमत है। अब बाबा ने हम सबको यही अन्तिम श्रीमत दी है कि बच्चे तुम्हारे जो पुराने संस्कार हैं, उन्हें खत्म करने के लिए याद की यात्रा में रहो। एकाग्रता का अभ्यास करो, अशरीरी बनो। यह अभ्यास कमी-कमज़ोरियों को खत्म करेगा। हम समर्पित बच्चों के मुख से सदैव रत्न निकालने चाहिए, कभी कुवचन नहीं निकलें। क्रोधमुक्त होकर रहो। दृष्टि, वृत्ति सदा पावन रहे तो हर चलन से, बोल से बापदादा का नाम बाला कर सकेंगे।

समर्पित माना एक बाबा ही मेरा संसार है। बाकी न कोई मेरा, न कोई मेरी...। मेरे दिल में भी तू है, नयनों में भी तू है, सिर पर भी तू है... बांहों में भी तू है... तेरे सिवाए मेरा कोई नहीं। तुम्हीं से सुनूं, तुम्हीं से बोलूं, तुम्हीं से हर संबंध निभाऊं...। ऐसा नष्टोमोहा, स्मृति स्वरूप रहने वाला ही अन्त समय के सेकण्ड के पेपर में पास विद ऑनर बन सकेगा।

जीते-जी मरना माना देह-भान रत्तिक मात्र भी न रहे

हर बाबा का बच्चा ड्रामा में अपना यादगार खुद बनाता है। जैसे कर्म करता है, जैसे सम्बन्ध रखता है। कर्म-सम्बन्ध का कनेक्शन है, उसमें जितना दिव्यता, अलौकिकता है वैसा यादगार बनता है। बाबा ने सच्चा और पक्का ब्राह्मण बनाया है। सच्चा ब्राह्मण सच्ची दिल से बाबा को राज़ी करेगा। बाबा जिसमें राज़ी फिर क्या करेगा काज़ी, यानी धर्मराज कुछ नहीं कर सकता। थोड़ा भी मिक्सचर होगा तो हाफ कास्ट ब्राह्मण हो जाएगा। यह टाइटल कौन-सा हो गया! अधूरा ब्राह्मण कैसा होगा! उसको इतनी खाने की परहेज नहीं होगी, सवेरे अमृतवेला ठीक नहीं होगा, क्लास में बहाना देगा। सच्चा ब्राह्मण मजाल है जो बहाना देवे!

पहले जब बाबा दृष्टि देता था तो अन्दर कम्पन्न होता था, समझते थे शरीर छोड़ रहे हैं। अभी यह नहीं कहते हैं, पर शरीर से न्यारे, अशरीरी हो रहे हैं। जैसे बाबा अशरीरी है, सर्व आत्माओं में एक परमात्मा ही अशरीरी है। परमपिता है, धर्म पिताओं का पिता है, वो दृष्टि देता है तो आँख खुल जाती है। आँख खुली तो बुद्धि भी बदल गई। बुद्धि है अन्दर, मन-बुद्धि-संस्कार। आत्मा में मन-बुद्धि-संस्कार हैं। समझते थे कि आत्मा शरीर धारण करती है पर मुझारा था कि आत्मा निर्लेप है, आत्मा ही परमात्मा है। अभी बाबा ने कितनी गहरी बात समझाई है कि आत्मा कर्म शरीर द्वारा करती है। शरीर आत्मा के बगैर कोई कर्म नहीं कर सकता है। उसमें कर्म और सम्बन्ध का कितना हिसाब-किताब है, यह बाबा ने आकर बुद्धि दी। दृष्टि देकर ध्यान खिंचवाया अपनी तरफ, कौन आया परदेशी। तो जिसका ध्यान दिव्य दृष्टिदाता की तरफ चला गया, वो जीते जी मर गया। वो जीता है पर मरे के बराबर। दुनिया वाले भी समझते हैं ये तो जैसे मरे के बराबर है। अन्दर देह से न्यारा, स्वभाव-संस्कार से भी न्यारा हो गया। बाबा की दृष्टि से शान्तिधाम का भी अनुभव हो जाता है। खुद शान्ति का सागर है, आत्मा को इशारा करता है तुम भी वहाँ की रहने वाली हो। मेरी संतान हो, यहाँ तुम मेरे से बिछुड़ी हो, रावण के चम्बे में आ गई हो। मैं उससे छुड़ाने आया हूँ। कितनी जीवन बदल गई है, कहाँ दुनिया, कहाँ हम रात-दिन का अन्तर हो गया।

राजयोगिनी दादी जानकी जी

ज़माना बहुत खराब है, बचो और बचाओ। जो बचता है वो औरों को भी बचा सकता है। सच्चे बनकर रहो। सच्चे बच्चे की बुद्धि पॉवरफुल होगी माना योग अच्छा होगा। वाणी में कम बोलेंगे और कर्म से दिखाई पड़ेगा। कर्म का कनेक्शन बुद्धि के साथ है। बाबा ने हमारी बुद्धि चेन्ज कर दी है। कभी क्षत्रिय की बुद्धि हो तो साक्षी होकर देखो। शुद्र बुद्धि वाला तो बाबा के घर में आएगा ही नहीं। अभी मन को अच्छा खाना मिलता है। पहले मन बिचारा भूखा था, शान्ति चाहिए, शान्ति चाहिए। अभी अच्छा खाना मिला तो शान्ति तो आ गई, फिर चिन्ता काहे की करें! तो अपनी बुद्धि पर बर्डन न रखो, न किसी पर आपका बर्डन हो। हमारे ऊपर केवल अपने को सुधारने की ज़िम्मेवारी है। दुनिया भले पीछे माने, पर हमें बाबा की बात पहले माननी है। जिससे मेरी जीवन बदल जाए, बस और कोई इच्छा नहीं है। बदलने शुरू होती है तो निश्चय अपने में और बाबा में बैठ जाता है। निश्चय रखा, संकल्प रखा तो बाबा मदद करता है। मदद मिलने से शक्ति आ जाती है। खुशी आ गई, सिर हल्का हो गया। तो कभी यह ख्याल न आए कि क्या करूँ, कैसे करूँ, यह क्षत्रिय के ख्याल हैं। यह कर, ऐसे कर वो बन गया ब्राह्मण। फिर करता है तो ऐसे नहीं लगता कि मैं करता हूँ, पर बाबा मदद करता है।

पुरानी दुनिया में रहते हो तो अपने को बचाके रखो, जो उसका असर आपके ऊपर न हो जाए, जो दुःख सहना पड़े। अपने को बिल्कुल डिटैच रखो। अटैचमेंट को समझना, डिटैच रहकर कितना सुखी रहते यह समझना। कुदरत का नियम है यह पांच अंगुली बराबर नहीं हैं। पर आदत ऐसी हो गई है जो नैचुरल को छोड़ अननैचुरल बन गए हैं। कौं-कौं करके सिर खपाने वाली बात करेंगे। अरे अब अच्छा करते हैं ना। मन को धीरज सिखाना, यह हाथ हमको सिखाता है, हाथ में हाथ मिलाकर चलो।

जो प्राचीन भारत की सभ्यता है, इंसान जाति है, परमात्मा के बच्चे हैं, सभ्यता और नम्रता ने यहाँ तक पहुंचाया है। नम्रता जब तक व्यवहार में नहीं आई है, ब्राह्मण से फरिश्ता कैसे बनेंगे! बाबा की शक्ल हमको हमारा फ्यूचर दिखाती है। खुली आँख से बाबा को देखो तो बाबा हमारा फ्यूचर है। तुम अपने को देख चेंज करो।